International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.51-57

वर्तमान युग में शिक्षा मनोविज्ञान के शैक्षिक निहितार्थ

ममता शर्मा*

शोध सारांश

शिक्षा मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान जब से माना गया है, तब से ही इसका महत्व बहुत अधिक बढ गया है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका महत्व सर्वाधिक शिक्षकों के लिये है। शिक्षण में अध्यापक का सीधा सम्बन्ध छात्रों से होता है। वह छात्रो को प्रगति की राह दिखाने वाला एक मार्ग प्रदर्शक है। यदि वह उचित तथा वैज्ञानिक विधियों से अपने विषय का ज्ञान छात्र तक पहुँचाता है तो वह निःसन्देह ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इस प्रकार के ज्ञान से वह शिक्षक अपने शिक्षण को पर्याप्त मात्रा में सुधार सकता है तथा अपने शिक्षण को प्रभावपूर्ण बना सकता है। अतः कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य बदलती हुयी सामाजिक व्यवस्था में कुशल आत्म निर्देशन की योग्यता में वृद्धि, व्यक्तित्व का अभिवर्द्धन और उसका सन्तुलित विकास करना तथा मानव स्वभाव को समझने में अध्यापक की सहायता करना हैं मानव स्वभाव के ज्ञान के द्वारा अध्यापक बालकों को उचित निर्देश देने और उनका पथ–प्रदर्शन करने सफल होता है। उचित मार्ग प्रदर्शन मिलने पर बालक सामाजिक परिस्थितियों से सामांजस्य स्थापित करने और सामाजिक दायित्वों का भली–भॅाति निर्वाह करने सफल होता है। अतः शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य बालकों में सदाचार की भावना विकसित करना है। शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य अध्यापक को तथ्यों और सामान्यीकरण से अवगत करवाकर उसके कार्य में सहायता देना है जिससे वह बालक को उसके सन्तुलित व्यक्तित्व के निर्माण में सहायता दे सके। वर्तमान युग की आवश्यकताओं को अनुभूत करते हुये मैंने शिक्षा मनोविज्ञान के शैक्षिक निहितार्थ को अपने शोधालेख का विषय बनाते हुये शिक्षा मनोविज्ञान के शैक्षिक निहितार्थ को समसामयिक दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्दः *निहितार्थ, निर्देशन, अभिवर्द्धन, अनुसंधान, समायोजन, मूल्यांकन, प्रशिक्षण, आलोचनात्मक, निर्गतता।*

प्रस्तावना

भारत में शिक्षा मनोविज्ञान के विकास ने एक विभिन्न मार्ग अपनाया। पुरातन के ऋषियो ने अपने आत्म को समझने की चेष्टा की तथा नश्वरवान संसार से उनका क्या सम्बन्ध है इसे जानने की ओर प्रयास किये। इस प्रकार की खोज उन्हे मानव व्यक्तित्व के ज्ञान की ओर ले गयी। उन्होने जानना चाहा कि मानव व्यक्ति का विकास कैसे होता है और वह किस प्रक्रिया द्वारा परम सत्य की ओर आकर्षित हो जाता है। यह प्रक्रिया ही शिक्षा कही गयी और मानव व्यक्तित्व का ज्ञान मनोविज्ञान कहा गया। इस प्रकार से भारत वर्ष में शिक्षा मनोविज्ञान का प्रारंभ परम सत्य की दार्शनिक खोज से जुडा बंधा है शिक्षा मनोविज्ञान एक बहुत पुरातन मनोवैज्ञानिक विषय है इसमें शामिल है वह मनोवैज्ञानिक प्रकरण जो शिक्षा से सम्बन्ध है। यह लगभग 100 वर्ष पहले अपने मूलरूप में सामने आया। यह समय प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के प्रारंभ से मेल खाता है विलियम बुन्ट की मनोविज्ञान संस्था लिपिग्ज में 1879 में स्थापित हुई उस समय से इसके विषय के सम्बन्ध में अनेक परिवर्तन आये।

* प्रवक्ता, श्री संस्कार शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, बस्सी, जयपुर, राजस्थान।

प्रारंभ में शिक्षा मनोविज्ञान से तात्पर्य सामान्य मनोविज्ञान के ज्ञान का प्रयोग शिक्षा के सिद्धान्त और अभ्यास से करना था। यह दृष्टिकोण पिछली शताब्दी के दूसरे अर्द्धकाल में विकसित हुआ जबकि मनोविज्ञान एक विज्ञान की भॉति दर्शनशास्त्र से अलग होकर पनपने लगाा। एक स्वतन्त्र वैज्ञानिक विषय का उभरना प्रयोगात्मक मनोविज्ञान ने बहुधा उन मसलो पर अनुसंधान किये जो कि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से शैक्षिक समस्याओं से जुडे हुये थे। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान ने भी शिक्षा विषेशज्ञों का सहयोग अपने प्रयोगो के फलों के मूल्यांकन के लिये किया। उनके फलो की सत्यता पर विचार करने को कहा गया और उनकी सहायता इस ओर मांगी कि क्या वह फल शिक्षण में सहायक है। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के फलो ने शिक्षकों का ध्यान मनोविज्ञान की ओर आकर्षित किया और उनकी रूचि ने उस मनोविज्ञान की उस शाखा के विकास को प्रोत्साहित किया जिसका निशाना शिक्षा विज्ञान को सहायता देना था । इस मनोविज्ञान को शिक्षा मनोविज्ञान कहा गया।

शिक्षा मनोविज्ञान का विकास सन 1950 के पश्चात बहुत तेजी से हुआ है। विभिन्न क्षेत्रों शिक्षा मनोविज्ञान पर अनुसंधान बहुत तेजी से हो रहे है। अनुसंधान कार्य अनेक दिशाओं में हो रहे है। इसमे से चार महत्वपूर्ण दिशाएॅ जिसमे बहुत से अनुसंधान हो रहे है वे हैः–

(अ) सीखना अथवा अधिगम

(ब) सीखने के लिये तैयारी जिसमे रूचि प्ररेणा इत्यादि उप विषय आते है

(स) मानसिक स्वास्थ्य एंव सामाजिक समायोजन एंव

(द) मापन तथा मूल्याकंन इनके अतिरिक्त अब शैक्षिक तकनीकी सम्बन्धी भी बहुत सा ज्ञान संग्रह हो रहा है। वर्तमान काल में मुख्य ध्यान इस ओर है कि आधुनिक तकनीकी विकासों का व्यक्तियों की शैक्षिक योग्यता बढाने में किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की अवधारणा– शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों तथा नियमों का प्रयोग शैक्षिक परिस्थितियों में करता है। शिक्षा मनोविज्ञान में विशेश व्यक्तियों (शिक्षक तथा शिक्षार्थी) के व्यवहार का अध्ययन विषेश शैक्षिक परिस्थितियों (कक्षा परिस्थियों) में किया जाता है किन्तु आजकल शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक अति विकसित शाखा मानी जाती है। वर्तमान समय में शिक्षा मनोविज्ञान के एक स्वतन्त्र विज्ञान बनने के मार्ग पर है। अब वह मनोविज्ञान के नियमों तथा सिद्धान्तो का अन्धानुकरण नही करता बल्कि स्वयं प्रयोग तथा अनुसंधान के द्वारा उनकी प्रमाणिकता की जॉच करता है। जब जॉच करने पर वे सिद्धान्त सही उतरते है तब उनका प्रयोग शैक्षणिक परिस्थितियों में किया जाता है इस प्रकार सामान्य मनोविज्ञान के प्रति उसका दृष्टिकोण आलोचनात्मक है। दूसरी बात यह है कि शिक्षा मनोविज्ञान का कार्य क्षेत्र, समस्याऐं एंव विधियॉ विशिष्ट है। आज का शिक्षा मनोविज्ञान पर पूर्ण रूपेण निर्भर नही है ये दोनों परस्पर निकट अवश्य हैं पर दोनों स्वतन्त्र मार्ग का अनुसरण कर रहे है।

गेट्स व अन्य का कथन है कि "शिक्षा सम्बन्धी ऐसे कई तथ्य है जिनका सामान्य मनोविज्ञान से कोई सम्बन्ध नही है, जैसे–पाठ्य विषयों का अध्यापन, प्रशिक्षण सम्बन्धी कठिनाईयों का निदान तथा निराकरण, शिक्षण उपलब्धियों का मापन, प्रौढशिक्षा, शैक्षिक निर्देशन आदि विशेष समस्याओं का निराकण शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा होता है।"[1]

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषा पर विभिन्न मनोविज्ञानिको तथा शिक्षा शास्त्रियों ने अपने अपने विचार प्रकट किये है जो इस प्रकार है।

स्किनर के अनुसार– "शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ शिक्षा में सामाजिक प्रक्रिया तथा मनोविज्ञान में व्यवहारिक विज्ञान से है।"[2]

एन.डी.लेविटोव विस्तृत प्रयोजन सम्बन्धी धारण करते है कि "शिक्षा मनोविज्ञान हमारे विज्ञान की वह शाखा है जिसका कार्य शिक्षा तथा शिक्षण के मनोवैज्ञानिक आधारों का अध्ययन है।"[3]

औसुवल के शब्दों में– "शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो कि विद्यालयी अधिकतम की प्रकृति दक्षता, निर्गतता एंव मूल्यांकन से जुड़ी है।" [4]

शिक्षा मनोविज्ञान के केन्द्रीय क्षेत्र का स्पष्टीकरण करते हुये

एम. सी. लिण्डग्रेन – ने कहा कि "शिक्षा के सम्बन्ध में तीन केन्द्रीय क्षेत्रों का वर्णन किया जाता है जो कि शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के मतलब के है। ये है (1) सीखने वाला (2) सीखने की प्रक्रिया तथा (3) सीखने की स्थिति।"[5]

सी. एच. जुड. के अनुसार – "शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषा जन्म से प्रौढत्व तक विकास की विविध अवस्थाओं से आगें बढते समय व्यक्तियों में आने वाले परिवर्तनों का वर्णन एवं व्याख्या करने वाले विज्ञान के रूप में दी जा सकती है।"[6]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि शिक्षा मनोविज्ञान एक व्यवहारिक विषय है जो कि मनोविज्ञान तथा शिक्षा दोनों क्षेत्रों के पारस्परिक सम्बन्धों को दर्शाता है। मानव व्यवहार का यह एक वैज्ञानिक अध्ययन हैं, जिसके द्वारा शिक्षा से जीवन के उद्देश्यों की प्राति में दिशा, निर्देश, भविष्य वाणी एवं आत्मा बोध होता है।

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य–

- **सामान्य उद्देश्य** – अध्यापक को ऐसे संगठित तथ्यों और सामान्यीकरणों से परिचित करना जो कि उसके लिए व्यावसायिक और सांस्कृतिक उद्देश्यों की उपलब्धि हेतु अधिकाधिक सहायक बन सके।
- **विशिष्ट उद्देश्य** –
  - ▪ बालकों में यह धारणा उत्पन करना कि–
  - o अभिवृद्धि को दिशा प्रदान की जा सकती है।
  - o सीखा जा सकता है।
  - o सामाजिक व्यवहार में सुधार सम्भव हैं।
  - o व्यक्तित्व को समायोजित किया जा सकता है।
  - ▪ अपेक्षित व्यवहार, जो कि शैक्षिक प्रयत्नों के लक्ष्य होने चाहिए, को निर्मित एवं परिभाषित करने में सहायक होना।
  - ▪ बालकों के प्रति पक्षपात रहित और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार विकसित करने में मदद करना ताकि उनके व्यवहार को वस्तुनिष्ठ बनाया जा सके।
  - ▪ बालको के सामाजिक सम्बन्धों में उपयुक्त जानकारी हेतु सहायता प्रदान करना।
  - ▪ शिक्षण की समस्याओं के हल करने के लिये तथ्य और सिद्धान्त प्रस्तुत करना जैसे –
  - o अनुदेशन सामग्री का उत्तम ढंग से चयन कैसे किया जा सकता है।
  - o इस सामग्री का उपयोग बुद्धिमतापूर्वक कैसे किया जा सकता है।
  - o अधिगम प्रक्रिया को कैसे निर्दिष्ट किया जाए ताकि विधि और सामग्री अधिगम के लिए बाधक न बन सके।
  - o प्रगतिशील शिक्षण, प्रविधियों, निर्देशन, क्रियात्मक प्रशासन एवं संगठन को स्थापित करने और परिभाषित करने में अध्यापक की सहायता करना।

शिक्षा मनोविज्ञान का विषय क्षेत्र – किसी विषय के क्षेत्र से तात्पर्य अध्ययन की सीमा से होता है जिस सीमा तक उस विषय के अन्तर्गत अध्ययन किया जा सकता है और विषय सामग्री से तात्पर्य उस सीमा से होता है जिस तक उसके क्षेत्र में अध्ययन किया जा चुका होता है शिक्षा मनोविज्ञान में मनुष्य की अभिवृद्धि, विकास एवं मानसिक योग्यताओं एवं क्षमताओं के स्वरूप उनकी मापन विधियों का अध्ययन किया जाता है तथा मनुष्य की शिक्षा के क्षेत्र में उनका अनुप्रयोग कर उसकी शिक्षा को प्रभावशाली बनाने की विधियॉ स्पष्ट की जाती है। यही इसका क्षेत्र है और इसी क्षेत्र से सम्बंधित इसकी विषय सामग्री है।

प्रारम्भिक तौर पर शिक्षा मनोविज्ञान का विषय क्षेत्र निम्नांकित तथ्यों पर केन्द्रित होता है–

- शिक्षार्थी की प्रकृति तथा उसके लक्षण।
- मानवीय वृद्धि और विकास।
- अधिगम प्रक्रिया को सुधारने संवारने तथा अच्छा बनाने के लिये सुविधाएँ प्रदान करना।
- बच्चों का मानसिक विकास तथा मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान।
- व्यक्तित्व विकास तथा समायोजन।
- विशिष्ट बालक – प्रतिभाशाली, पढाई में पिछडे बालकों अपचारी बालकों से सम्बंधित ज्ञान।
- मापन तथा मूल्यांकन।
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के द्वारा शिक्षार्थी की प्रकृति को दर्शाना– उसकी बुद्धि, अतीत के अनुभवों आदि का अध्ययन करना।
- शिक्षक तथा मार्गदर्शन कार्यक्रम।
- अभिप्रेरणा तथा अधिगम का अन्तरण।

शिक्षा मनोविज्ञान के शैक्षिक निहितार्थ –

एलिस ने कहा कि – "शिक्षकों को अपने शिक्षण में उन मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करते रहना चाहिए जो सफल शिक्षण और प्रभावशाली अधिगम के लिए अनिवार्य है।"[7]

अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अत्यन्त लाभदायक ही वरन आवश्यक भी है। केवल शिक्षा मनोविज्ञान ही अध्यापक को व्यवसाय में निपुण बनता हैं। अध्यापक को सभी प्रकार की विद्यालय परिस्थितियों में शिक्षा में मनोविज्ञान का ज्ञान उपयोगी सिद्ध होता है। शिक्षा मनोविज्ञान की महत्वता को स्पष्ट करते हुये थामस फुलर ने कहा है कि "अध्यापक को छात्रों के स्वभाव का उतना ही अध्ययन करना चाहिए जितना अध्ययन वह पुस्तकों का करता है।" [8]

शिक्षा मनोविज्ञान के शैक्षिक निहितार्थ को अग्रलिखित क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करने के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता हैं।

- **अन्तर्निहित प्रकृति का ज्ञान** – शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापक को छात्रों की सहज प्रकृति को समझने में सहायता देता है। बालको में कई जन्मजात प्रवृतियॉ प्रेरणायें तथा रूचियाँ होती है। केवल वही अध्यापक इन मूल प्रवृत्तियों के समुचित विकास में सफल रहता है जिसको कि शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान होता है।
- **व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान** – शिक्षण को प्रभावी तभी बनाया जा सकता है जबकि अध्यापक को प्रत्येक बालक की योग्यता, कुशलता, रूचि, स्वभाव, विशेषताओं तथा कमियों का ज्ञान हो। इन सभी प्रकार की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान अध्यापक को शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन से ही होता है। कक्षा में कुछ छात्र अत्यन्त प्रतिभाशाली कुछ सामान्य तथा कुछ कमजोर होते है । यदि अध्यापक को इन विभिन्नताओं का ज्ञान होगा तो वह अपने शिक्षण को छात्रों के अनुरूप ढालने में सफल होगा।
- **व्यवहार का ज्ञान** – विकास की विभिन्न अवस्थाओं में बालक के स्वभाव में भी परिवर्तन आते रहते है। शिक्षा मनोविज्ञान इन विभिन विकास की अवस्थाओं में बालक के स्वभाव को जानने में अध्यापक को छात्रों के स्वभाव का ज्ञान होता हैं। केवल वही अध्यापक अपने शिक्षण को छात्रों के स्वभाव तथा रूचियों के अपुरूप ढाल सकता है। जिसे शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान होता हैं। ऐसे अध्यापक जिन्हे शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान नही होता है ऐसा करने में पूर्णतया असफल रहते है।
- **अधिगम का ज्ञान** – शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को शिक्षा से सम्बंधित अधिगम के विभिन्न पहलुओं के विश्लेषण तथा समझने में सहायता प्रदान करता है। शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान से अध्यापक अपने शिक्षण के समय अधिगम की अनुकूलतम परिस्थितियाँ बनाये रख सकता हैं। वह अपनी विषय वस्तु को

विभिन्न प्रकार की दृश्य श्रव्य सामग्री के उपयोग अधिक प्रभावशाली सुरूचिपूर्ण बनाकर छात्रों को सीखने के लिये प्रेरित कर सकता हैं। शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान के अभाव में ऐसा करने में वह असफल रहेगा।

- **अचेतन मन का ज्ञान** – शिक्षा मनोविज्ञान अध्यसपक को छात्रों के अचेतन मन को जानने में सहायता प्रदान करता हैं। अचेतन मन, व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। यही व्यक्ति के मन का महत्वपूर्ण भाग होता है। शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापक को छात्रों के अचेतन मन की जानकारी प्राप्त करने में सहायक होता है तथा अध्यापक इसका उपयोग छात्रों के व्यक्तित्व के विकास में समुचित रूप से कर सकता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य का ज्ञान** – शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञानरूप अध्यापक को छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य की जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान देता हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ होना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि शारीरिक रूप से । शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान से अध्यापक छात्रों के सभी प्रकार की मानसिक समस्याओं जैसे निराशा, चिन्ता, भय, तनाव आदि का समुचित समाधान कर सकता है और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के उत्तम बनाने में सहायता प्रदान कर सकता है।
- **शिक्षा के विभिन्न पक्षों का ज्ञान** – शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापक की शिक्षा के विभिन्न पक्षों जैसे –शिक्षण, कौशल शिक्षण सिद्धान्त, शिक्षण विधियॉ व्यक्तित्व समायोजन, मापन तथा मूल्याकंन आदि का ज्ञान प्रदान करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान की बी. एड. पाठ्यक्रम में उपयोगिता – वर्तमान समय में शिक्षा बालक के सर्वागीण विकास पर बल देती हैं। आजकल अध्यापक के सामने अनेक कक्षागत समस्याऍ उपस्थित होती हैं जिनका निराकरण करना अध्यापक का दायित्व हो जाता हैं। इस दायित्व का निर्वाह करने के लिए अध्यापक को शिक्षा मनोविज्ञान से बहुत शिक्षा मिलती है। अतः मनोविज्ञान अध्यापक को एक अच्छा अध्यापक बनाने में सहायता देता है। शिक्षा सम्बंधित हर समस्या का समाधान मनोविज्ञान के अन्तर्गत आ जाता है। शिक्षक अपने कार्य में रहते हुये मनोविज्ञान का प्रयोग किस प्रकार कर सकता है या उसे मनोविज्ञान द्वारा कितनी सहायता मिल सकती है आदि अनेक विषयों पर अग्रलिखित पंक्तियों में विचार किया गया है।

- अपने स्वरूप की जानकारी प्राप्त करना – अध्यापक बनने के पहले यह जान लेना आवश्यक है कि व्यक्ति में व्यावसायिक योग्यताऍ है या नही, शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को अपने स्वभाव, बुद्धि, स्तर, व्यवहार एवं योग्यता आदि का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता हैं तथा शिक्षण कार्य को सफलता पूर्वक चलाने में उसकी सहायता करता है, क्योकि शिक्षा मनोविज्ञान में ऐसी मापन की विधियॉ विकसित हुई है जिनके द्वारा अध्यापक अपने ज्ञान की व्यक्तित्व की, बुद्धि स्तर की, समान रूचियों तथा सम्मान की विधिवत जानकारी प्राप्त करता है। शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को बच्चों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करने के लिये सलाह देता है तथा उसे अपने स्वरूप को पहचानने में सही जानकारी देता है।
- बालक के स्वरूप की जानकारी प्राप्त करना – इस सम्बन्ध में जॉन एडमस ने बताया है कि किसी भी विषय की जानकारी के बजाय बालक की जानकारी प्राप्त करना अधिक महत्वपूर्ण है। एक सफल अध्यापक को किसी बालक के मानसिक स्तर, बुद्धि स्तर, सफल योग्यता स्तर तथा उसकी रूचियों व व्यक्तित्व की विभिन्नताओं को पहचान लेना आवश्यक है। इन सब बातों की जानकारी वह मनोवैज्ञानिक विधियों के बातो की जानकारी वह मनोवेज्ञानिक विधियों के माध्यम से प्राप्त कर सकता है।
- कक्षागत समस्याओं का निदान व समाधान – कक्षाकक्ष की स्थिति में जो समस्याएँ उपस्थित होती है उनमें खास तौर से अनुशासनहीनता, बाल अपराध, सामान्य बालक, विशिष्ट बालक और पिछड़े बालकों आदि से सम्बंधित होती हैं। शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक के समक्ष उपस्थित होने वाली इन समस्याओं के

कारणो को खोजने या निदान करने तथा इनका समाधान ढूढने में काफी हद तक सहायता करता है। ऐसी परिस्थितियों से गुजरने वाले अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह वह बालक के सीखने की प्रक्रिया में सहायक बने व उनके साथ अनुकूलन करने की प्रवृति जागृत करे। इस बात के लिये आवश्यक है कि शिक्षकों को मनोविज्ञान के विभिन्न सिद्धान्तों का व्यवहारिक ज्ञान होना चाहिए तथा उसमें बाल व्यवहार को समझने की क्षमता होनी चाहिए।

कोलेसनिक के अनुसार "शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक विशेष को यह निर्णय करने में सहायता दे सकता है कि वह विशिष्ट परिस्थियों में अपनी विशिष्ट समस्याओं का समाधन किस प्रकार करे।" [9]

- बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना– शिक्षाविदों का कहना है कि हमारी शिक्षा का मुख्य उददेश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। बालक का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है जबकि उसके व्यक्तित्व का भली भांति विकास हो सके और व्यक्तित्व का विकास शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान पर निर्भर करता है। यदि अध्यापक को मनोविज्ञान की विधियों व सिद्धान्तो का पूर्णरूपेण ज्ञान होता है तो वह बालक के विकास में बहुत सहयोगी बनता है। अत संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास शिक्षक के मनोवैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित होता है।
- उपयुक्त पाठयक्रम निर्माण में सहायता करना– बालक के विकास की अवस्थाओं के समय उसमें अनेक प्रकार की रूचियों प्रवृतियों तथा आवश्यकताओं का विकास होता है। शिक्षा मनोविज्ञान इस सब बातों का ध्यान रखते हुये एक अध्यापक को बालक के लिए उपयोगी पाठयक्रम तैयार करने में सहायक होता है। स्किनर महोदय ने इन्ही बातों को इस प्रकार व्यक्त किया है "उपयुक्त पाठयक्रम बालको के विकास व्यक्तिगत विभिन्नताओं प्ररेणा और अधिगम के सिद्धान्तों के अनुसार मनोविज्ञान पर आधारित होना चाहिए।"[10]

निष्कर्ष

शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान ही शिक्षक की सफलता का एक महत्वपूर्ण रहस्य है। इस ज्ञान का सहारा लिए बिना व्यावसायिक जीवन की यात्रा समाप्त कर देनी पडती है। हमारा यह अकाट्य तर्क है कि मनोविज्ञान उसे अपने कर्तव्यों और दायित्वों का पालन करने में हर क्षण, हर घड़ी सहायता और मार्ग प्रदर्शन करता है। अतः सार रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षक का मार्ग ही केवल कक्षागत शिक्षण के लिये प्रशस्त नही किया है बल्कि उसने शिक्षकों अभिभावकों, छात्रों एवं समाज में व्याप्त शैक्षिक समस्याओं को पहचान कर उनके निराकरण करने के लिये भी जागरूक किया है। उसने समायोजन की क्षमता भी विकसित की है, कार्य कुशलता का विकास भी किया है और नई पीढी के निर्माण में शिक्षक की भूमिका को भी सक्षम बनाया गया।

सन्दर्भ

1. राजोरिया, अरूण कुमार, अरोडा प्रीति, "अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया", पृ.सं. 24
2. पाराशर, डॉ प्रतिभा भार्गव, डॉ सुनीता, "बाल्यावस्था एवं अभिवृद्धि", पृ.सं.39
3. Leyitoy,N.D.: Essentionals of Educational Psychology Bratis lawa SPN , 1951, Page No.-18 1951
4. पाराशर, डॉ प्रतिभा भार्गव, डॉ सुनीता "बाल्यावस्था एवं अभिवृद्धि", पृ.सं. 40
5. Lindgren,M.C. : Educational Psychology in the class – room (Fourth edition) wiley International ed., page No. 5
6. चौहान रीता, पाठक पी. डी, "बाल्यावस्था एवं उसका विकास", पृ.सं. 13
7. पाराशर, डॉ प्रतिभा भार्गव डॉ सुनीता "बाल्यावस्था एवं अभिवृद्धि", पृ.सं. 57
8. राजोरिया, अरूण कुमार, अरोडा प्रीति, "अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया", पृ.सं. 47
9. राजोरिया, अरूण कुमार, अरोडा प्रीति, "अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया", पृ.सं. 51
10. पाराशर, डॉ प्रतिभा, भार्गव डॉ सुनीता "बाल्यावस्था एवं अभिवृद्धि", पृ.सं. 60

सन्दर्भ ग्रंथ–सूची

- राजोरिया अरूण कुमार,अरोडा प्रीति "अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया", 2007
- पाराशर डॉ प्रतिभा, भार्गव डॉ सुनीता "बाल्यावस्था एवं अभिवृद्धि", 2016
- माथुर एस.एस. "शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मंदिर 2003
- भटनागर, सुरेश "शिक्षा मनोविज्ञान" आर.लाल बुक डिपो 1995
- शर्मा गंगाराम, भार्गव विवेक "शिक्षा मनोविज्ञान एस.पी.भार्गव बुक हाउस 2007
- चौहान रीता, पाठक पी. डी, "बाल्यावस्था एवं उसका विकास" 2016
- Leyitoy,N.D.: Essentionals of Educational Psychology Bratis lawa SPN, 1951, Page No.-18 1951
- Lindgren,M.C.: Educational Psychology in the class – room (Fourth edition) wiley International ed., page No. 5

❖◆❖